उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद

U.P. Council of Agricultural Research

अष्टम तल, किसान मण्डी भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226 010

8th Floor, Kisan Mandi Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226010

पत्रांक:92 /एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनॉक: 25–04–2024

दिनांक	:	25 अप्रैल, 2024
समय	:	12:00 बजे
स्थान	:	उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति	:	संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की वर्ष 2024–25 की तृतीय बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियॉं

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2024–25 की तृतीय बैठक श्री पियूष कुमार शर्मा, सचिव, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 25 अप्रैल, 2024 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक; कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक; शुआट्स प्रयागराज के मौसम वैज्ञानिक; गन्ना विभाग; उद्यान विभाग; पशुपालन विभाग; रेशम विभाग; राहत आयुक्त के प्रतिनिधि; प्रबंधक कृषि, सी.एस.सी.ई गवर्नेस सर्विसेज इंडिया लिमिटेड, लखनऊ तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त बैठक में बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के मौसम वैज्ञानिक व कीट वैज्ञानिक, कृषि विश्वविद्यालय, मेरठ के मौसम वैज्ञानिक; रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के तिलहन व दलहन वैज्ञानिक तथा आई.आई.एस.आर., लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक द्वारा ऑनलाइन प्रतिभाग किया गया।

प्रथम सप्ताह (25 अप्रैल से 02 मई, 2024) का मौसम पूर्वानुमान

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार प्रथम सप्ताह के दौरान 26 अप्रैल एवं 27 अप्रैल, 2024 को प्रदेश के पश्चिमी भाग बुंदेलखण्ड क्षेत्र के दक्षिणी भाग में मेघगर्जन के साथ स्थानीय स्तर पर कहीं–कहीं छिट–पुट वर्षा होने की संभावना है जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में कोई प्रभावी वर्षा न होने से मौसम मुख्यतया शुष्क रहने की संभावना है। इस सप्ताह के आरम्भिक 3 से 4 दिनों के दौरान प्रदेश के मध्यवर्ती एवं दक्षिणी भागों में दिन के दौरान 25 से 35 कि.मी. प्रति घंटा की गति से तेज पछुआ हवायें चलने की भी संभावना है।

प्रदेश के उत्तर–पूर्वी मैदानी क्षेत्र के पूर्वी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से 2 से 4 डिग्री सेल्सियस अधिक, उत्तर–पूर्वी मैदानी क्षेत्र का शेष भाग एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से अधिक, भावर तराईक्षेत्र के पूर्वी भाग, पूर्वी मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य के आसपास तथा मध्य मैदानी क्षेत्र के पूर्वी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से कम जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से 2 से 4 डिग्री सेल्सियस कम रहने की संभावना है।

प्रदेश के भावर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 32 से 34 डिग्री सेल्सियस; भावर तराई क्षेत्र का पूर्वी भाग, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के मध्यवर्ती भाग एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 34 से 36 डिग्री सेल्सियस; पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग, दक्षिणी–पश्चिमी अर्ध शुष्क मैदानी एवं मध्य मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग एवं उत्तर–पूर्वी मैदानी क्षेत्र के उत्तर–पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 38 से 40 डिग्री सेल्सियस, जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 40 डिग्री सेल्सियस से अधिक रहने की संभावना है।

प्रथम सप्ताह के दौरान प्रदेश के उत्तर पूर्वी मैदानी भाग पूर्वी मैदानी भाग, विंध्य क्षेत्र, बुंदेलखण्ड क्षेत्र, अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र एवं मध्य मैदानी क्षेत्र में कहीं–कहीं ऊष्ण लहर (लू) चलने की संभावना है।

द्वितीय सप्ताह (03 से 09 मई, 2024) का मौसम दृष्टिकोण

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम दृष्टिकोण के अनुसार द्वितीय सप्ताह (03 से 09 मई, 2024) के दौरान प्रदेश के तराई भाग में स्थानीय स्तर पर कहीं–कहीं छिट–पुट वर्षा होने जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में कोई प्रभावी वर्षा न होने से मौसम मुख्यतया शुष्क रहने की संभावना है। प्रदेश के उत्तर–पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के उत्तर–पूर्वी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से अधिक तथा भावर तराई, पश्चिमी मैदानी एवं मध्य मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से कम जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य के आस पास रहने की संभावना है।

प्रदेश के भावर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 32–34 डिग्री सेल्सियस; पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 34–36 डिग्री सेल्सियस; भावर तराई क्षेत्र का पूर्वी भाग, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के मध्यवर्ती भाग एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 36–38 डिग्री सेल्सियस; मध्य पश्चिमी मैदानी एवं दक्षिणी–पश्चिमी अर्ध शुष्क मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग तथा बुंदेलखंड एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 38–40 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले दो सप्ताह हेतु कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:–

- कटाई के बाद खाली खेत में हरी खाद हेतु सनई/ढैंचा की बुवाई मध्य मई के पूर्व समाप्त करें।
- गेहूँ की कटाई के बाद फसल अवशेष को कदापि न जलायें बल्कि इसे खेत में जोतकर मिलायें एवं सड़ाकर मृदा की उर्वरा शक्ति बढ़ायें। गेहूँ के अवशेष को सड़ाने के लिए 20 किग्रा0/हे0 नत्रजन अथवा 2.5 किग्रा0/हे0 ट्राईकोडरमा बिरडी को मिट्टी या बालू में मिलाकर जुताई से पहले खेत में डालकर मिला दें।
- बाजरा, ग्रीष्मकालीन मूँगफली, सूरजमुखी, चारा फसलों एवं लीची के बागों में पर्याप्त नमी बनाये रखने के लिए आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- किसान भाई रबी फसलों की कटाई–मड़ाई के उपरांत भण्डारण से पूर्व अनाज को अच्छी तरह से सुखा लें, जिससे नमी की मात्रा 10 प्रतिशत से अधिक न हो इसके लिये किसान भाई दानों को दांतों के नीचे दबाने से कट की आवाज आने पर इसे भण्डारण करने योग्य समझें।
- रबी फसलों की कटाई के उपरान्त खाली खेतों की गहरी जुताई करें।
- उत्तर प्रदेश शासन के निर्देश के क्रम में फसल अवशेषों को जलाना प्रतिबन्धित कर दिया गया है साथ ही साथ कम्बाइन हार्वेस्टिंग मशीन स्ट्रा रीपर विद बाइन्डर अनिवार्य कर दिया गया है। उक्त के दृष्टिगत किसान फसल अवशेषों को खेतों में न जलाएं।

जायद फसलों की खेती

- मूंग की फसल में काले सिरवाली सफेद रंग के इल्लियों का आक्रमण देखने को मिल रहा है। इसके शरीर के प्रत्येक खण्ड पर काले रंग के धब्बे देखे जा सकते है। यह इल्लियां छोटे पौधों पर अधिक आक्रमण कर रही है। इनसे फसल सुरक्षा के लिये नीम के तेल का 5 प्रतिशत का घोल बनाकर फसल पर एक सप्ताह के अंतराल पर 2 बार छिड़काव करें या इमामेक्टिन बेजोएट 5 प्रतिशत एस.जी. की 1 ग्राम मात्रा को दो लीटर पानी में मिलाकर 12 से 15 दिनों के अंतराल पर 2 बार शाम के समय छिड़काव करें।
- उर्द/मूँग की फसल में पीला चित्रवर्ण (मोजैक) रोग दिखाई देते ही प्रभावित पौधे सावधानीपूर्वक उखाड़ कर नष्ट (जला दे/गाड़ दें) कर दें। 5 से 10 पौढ़ मक्खी (सफेद मक्खी) प्रति पौध की दर से दिखाई पड़ने पर आक्सीडेमेटॉन–मिथाइल 25 प्रतिशत ई.सी. या डाइमेथोयेट 30 ई.सी. 1 लीटर प्रति हे. की दर से 600–800 ली. पानी मिलाकर छिड़काव करना चाहिये।
- मूँग/उर्द में पहली सिंचाई बुआई के 30–35 दिन के बाद आवश्यकतानुसार सिंचाई करें इससे पूर्व सिंचाई करने पर जड़ों में नत्रजन स्थिरीकरण ग्रन्थियों का विकास ठीक से नहीं होता है।

गेहूँ की खेती

- मड़ाई के उपरान्त गेहूँ को धूप में सूखाकर ही (दांत से काटने पर कट से आवाज आने पर) भण्डारण करें जिससे भण्डारण में होने वाली हानि से बचा जा सकें।
- अनाज को धातु की बनी बखारियों अथवाा कोठिलों, बोरियों या कमरें में जैसी सुविधा हो भण्डारण करें। भण्डारण के लिए धातु की बनी बखारी बहुत ही उपयुक्त है। भण्डारण के पूर्व कोठिलों तथा कमरे को साफ कर लें और दीवालों तथा फर्श पर मैलाथियान 50 प्रतिशत के घोल (1:100) को 3 लीटर प्रति 100 वर्ग मीटर की दर से छिड़काव के बाद सूखने के उपरान्त भण्डारण करें। बखारी के ढक्कन पर पालीथीन लगाकर मिट्टी का लेप कर दें जिससे वायुरोधी हो जायें।

गन्ना की खेती

- गन्ने की बुवाई यथाशीघ्र समाप्त करें।
- पेड़ी प्रबंधन हेतु रेटून मैनेजमेंट डिवाइस द्वारा ठूठों की छटाई के बाद सिंचाई कर दें। तत्पश्चात पर्याप्त नमी की दशा में उर्वरकों का प्रयोग करें।
- शरदकालीन बावग गन्ने में अन्तःफसल की कटाई/खुदाई के पश्चात फसल अवशेष मृदा में मिला दें तथा सिंचाई पश्चात 130 किग्रा. यूरिया प्रति हेक्टेयर की दर से गन्ने की लाइनों में टॉप ड्रेसिंग कर दें।
- गन्ने की पत्तियों पर अंकुर बेधक एवं चोटी बेधक कीट के अंडे दिखने पर पत्ती को तोड़कर नष्ट कर दें जिससे कीट के आगे की पीढ़ी समाप्त हो जाय।
- गन्ने के जिस खेत में लालसड़न रोग का प्रकोप हो, उसमें कम से कम एक वर्ष तक गन्ने की फसल न करें।
- बसंत के प्रारंभ में बोये गये गन्ने की गुड़ाई करें।
- प्रदेश में गन्ने के क्षेत्रफल तथा आच्छादन का आंकलन करने हेतु गन्ना विभाग द्वारा सर्वेक्षण किया जा रहा है। अतः कृषकों से अपील है कि वह सर्वे करने वाले कर्मचारियों का सहयोग करें।

सब्जियों की खेती

- फरवरी/मार्च माह में बोई गई कद्दूवर्गीय फसलों में यदि 10 हरा फुदका कीट की संख्या प्रति हिल दिखाई दे तो फल तुड़ाई उपरांत फसल पर इमिडाक्लोरोपिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. 1.0 मिली. को प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें जबकि तना व फल छेदक कीट के नियंत्रण के लिये फ्लुबेन्डीमाइड 39.35 एस.सी. की 1.0 मिली. को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- मिर्च में पर्णकुंचन एवं मोजैक विषाणु रोग का प्रकोप अधिक होता है। इस रोग का प्रसार वाहक कीट सफेद मक्खी या हॉपर कीट के द्वारा होता है। इसके प्रसार की रोकथाम हेतु आवश्यकतानुसार इमिडाक्लोरोपिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. 1.0 दवा को प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 10 से 12 दिनों के अंतरातल पर छिड़काव करें तथा रोग ग्रसित पौधों को उखाड़कर जला दें अथवा मिट्टी में दबा दें।
- बैंगन एवं टमाटर की फसल को तना और फलबेधक कीट से बचाव के लिये क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 1.0 मिली. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर 10–15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।
- हल्दी एवं अदरक की बुवाई हेतु खेत की तैयारी एवं कंद की व्यवस्था करें।
- भिण्डी की फसल में सफेद मक्खी के द्वारा पीत शिरा मोजैक वायरस के प्रसार से रोग फैलता है। इसका प्रकोप पत्तियों एवं फलों पर होता है, पौधे एवं फलों की बढ़वार रूक जाती है। इसका प्रकोप पत्तियों पीली पड़ जाती है। इसकी रोकथाम के लिये ग्रसित पौधें को उखाड़कर जला दे या मिट्टी में दबा दें तथा रोग वाहक कीट को नीला चिपचिपा ट्रैप 8 से 10 ट्रैप प्रति हे. लगायें। इसके रासायनिक उपचार में इमिडाक्लोरोपिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. 1.0 मिली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- भिण्डी की शाखा एवं फलबेधक कीट के नियंत्रण हेतु फेरोमोन ट्रैप 5 प्रति हेक्टेयर फसल में 6 से 12 इंच ऊपर लगायें अथवा फ्लुबेन्डीमाइड 39.35 एस.सी. की 2.0 मिली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर पर्णीय छिड़काव फल तुड़ाई उपरांत सायं काल में करें।
- कद्दूवर्गीय फसलों को फल मक्खी से बचाने हेतु क्यू ल्योर फेरोमोन ट्रैप 8 से 10 ट्रैप प्रति हे. की दर से लगायें।

बागवानी

- आम तथा लीची के बागों में आवश्यकतानुसार नमी बनाये रखें।

- आम में फुदका/भुनगा कीट के बचाव के लिये इमिडाक्लोरोपिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. नामक कीटनाशी की 1 से 2 मि.ली. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर पर्णीय छिड़काव करें।
- आम में गलन विकृति को कम करने के लिये फलों की तुड़ाई से एक माह पूर्व साप्ताहिक अंतराल पर डाइहाईड्रेट कैल्शियम क्लोराइड 2 प्रतिशत तथा पोटेशियम सल्फेट 2 प्रतिशत का छिड़काव करें।
- आम के आतंरिक सड़न रोग के नियंत्रण हेतु बोरेक्स तत्व की 6 से 8 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर पहला पर्णीय छिड़काव करें।
- आम फसल में लगने वाला कैटरपिलर (कटर कीट) के नियंत्रण हेतु स्पाइनेटोरेम 1 मिली. प्रति 3 लीटर पानी के साथ घोलकर या क्लोरोसाइपर (क्लोरोपाइरीफॉस 50 प्रतिशत + साइपरमेथ्रिन 5 प्रतिशत) 2 मिली. प्रति लीटर पानी में घोलकर प्रथम छिड़काव करें तथा आवश्यकतानुसार 10 से 15 दिन बाद दूसरा छिड़काव करें।
- आम के विभिन्न प्रकार के रोगों एवं कीट से होने वाले कुप्रभाव, फल आकर्षण तथा साफ–सथुरा प्राप्त करने हेतु फ्रूट कवर बैग का प्रयोग जरूर करें।
- लीची के फल को फ्रूट क्रैकिंग से बचाने के लिये शाम के समय निश्चित अंतराल पर सिंचाई करते रहें तथा कैल्शियम नाईट्रेट 10 ग्रा. बोरेक्स 800 मि.ग्रा. का प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव भी करें।
- नींबू की टहनियां सूख रही हो तो उन्हें काटकर स्प्रेयर की एक टंकी में 50 ग्राम जिंक सल्फेट मोनोहाड्रेट घोल बनाकर 10 दिनों के अंतराल पर 2 से 3 पर्णीय छिड़काव करें।
- आम में फलमक्खी से बचाव हेतु मिथाइल यूजिनाल एवं क्यु ल्योर ट्रैप 8 से 10 ट्रैप प्रति हे. लगाये तथा नीम एक्सट्रैक्ट 5 प्रतिशत प्रति लीटर पानी में घोलकर 10 से 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।
- नींबू एवं आंवला के बागों में फूल खिलने का समय है इसलिये किसी भी तरह से पानी नहीं देना चाहिये।

पशुपालन

- वर्तमान में ब्रुसेला एवं एफ.एम.डी. का निशुल्क टीकाकरण चल रहा है। जो 30 अप्रैल तक चलेगा। 15 मई से एच.एस. का टीकाकरण प्रारंभ होगा।
- मुर्गियों के आहार में विटामिन सी, सेलेनियम, एंटीआक्सीडेंट की मात्रा बढ़ा देनी चाहिये। गर्मी में अंडो को 26 डिग्री सेन्टीग्रेट के तापमान पर रखना चाहिये। अन्यथा वे खराब हो जाते है। उनका पीला भाग लाल हो जाता है एवं आकार भी घर जाता है।
- ज्वार की फसल में यदि सिंचाई नहीं हुई है तो सूखे की स्थिति में पशुओं को चारा न खिलायें।
- नये गेहूं के भूसे को 4 से 5 घंटा पानी में भिगाने के उपरांत ही पशुओं को खिलायें।
- वर्तमान मौसम में पशुओं में टिक्स (किलनी) की रोकथाम हेतु डाईसाइक्लोमिन 4 मिली. प्रति लीटर पानी की दर से उपचार करें तथा पशुओं के पशुघर में डाईसाइक्लोमिन की 2 मिली. मात्रा प्रति ली. की दर से छिड़काव करें।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वारा पर पशु चिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु पशुपालक टोल फ्री हैल्पलाइन नं. 1962 पर सम्पर्क करें।

मत्स्य पालन

- वर्तमान में अधिक तापमान के दृष्टिगत मत्स्य पालन तालाबों में 5 से 5.5 फुट तक पानी बनाये रखें।
- मछलियों में वृद्धि हेतु पूरह आहार का प्रयोग मछलियों के वजन के 1 से 2 प्रतिशत तक किया जाय।
- कामन कार्प मछलियों के प्रजनन के दृष्टिगत प्रजनकों (ब्रूडर) को पृथककरण उपरांत उनका विशेष पोषण सुनिश्चित किया जाय।
- वर्तमान में कॉमन कार्प मछलियों का बीज उत्तर प्रदेश मत्स्य विकास निगम या निजी क्षेत्र में स्थापित हैचरियों पर प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।
- मछलियों को निश्चित समय पर ही भोजन दिया जाय।

रेशम पालन

- शहतूत उद्यान में चाकी कीट पालन से पूर्व आवश्यकतानुसार सिंचाई सुनिश्चित की जाय।
- पत्ती संरक्षण अवधि कम रखी जाय। पत्ती तोड़ने का कार्य सुबह शाम ठंडे समय में करें।

वानिकी

- बांस की रोपाई बांसुरी विधि से करें।
- आवश्यकतानुसार पौधों की सिंचाई करें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 09 मई, 2024 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः– क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट *upcar.up.gov.in* पर भी उपलब्ध है।

08/04/24

(पीयूष कुमार शर्मा)
सचिव

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. स्टाफ ऑफीसर, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. अपर मुख्य सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेगें।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।

32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
43. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
44. प्रदेश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र
45. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
46. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
47. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

25-4-24

(विनोद कुमार तिवारी)
वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2024–25 की तृतीय बैठक दिनांक 25 अप्रैल, 2024 की उपस्थिति

1. श्री पीयूष कुमार शर्मा, सचिव, उपकार, लखनऊ।
2. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
3. डा. विनोद कुमार तिवारी, वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ।
4. श्री अमर सिंह, संयुक्त गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश।
5. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
6. डा. राजीव कुमार वर्मा, संयुक्त निदेशक शाकभाजी, उद्यान भवन, सप्रू मार्ग लखनऊ।
7. डा. अनिल दीक्षित, संयुक्त निदेशक प्रक्षेत्र, पशुपालन, उत्तर प्रदेश (ऑनलाइन)।
8. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
9. श्री ओमकार सिंह त्यागी, प्रबंधक कृषि, सी.एस.सी.ई गवर्नेस सर्विसेज इंडिया लिमिटेड, विजय खण्ड गोमती नगर लखनऊ।
10. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आवजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
11. श्री वैभव श्रीवास्तव, ओ.एस.डी., राहत आयुक्त कार्यालय, एनेक्सी।
12. सुश्री अन्नू देवी, ओ.एस.डी, राहत आयुक्त कार्यालय, एनेक्सी।
13. डा. प्रवीन चरन, टेक्नीकल ऑफीसर, जी.के.एम.एस. परियोजना, नैनी एग्रीकल्चर इंस्टीट्यूट, शुआट्स, प्रयागराज (ऑनलाइन)।
14. श्री नीरेन्द्र कमार, रेशम विकास अधिकारी, रेशम, उत्तर प्रदेश।
15. डा. यू.पी. शाही, प्राध्यापक मृदा विज्ञान एवं प्रधान अन्वेषक, ग्रामीण कृषि मौसम सेवा (जीकेएमएस) (ऑनलाइन)।
16. डा. सुरेन्द्र कुमार सिंह, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (कीट विज्ञान विभाग), बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
17. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ (ऑनलाइन)।
18. श्री बाल कृष्ण, उद्यान भवन, सप्रू मार्ग लखनऊ।
19. श्री नेत्रपाल यादव, उद्यान विशेषज्ञ, उद्यान भवन, सप्रू मार्ग लखनऊ।